एक चाँद और बातें... बातें सौ!

चार साल के अक्का को बड़ा अजीब लगता। जहाँ जाता हूँ चाँद साथ-साथ ही बना रहता है। गाड़ी में, पैदल। तेज़ चलो तो वो भी तेज़ चले, हम धीरे तो वो भी धीरे। एक दिन उसे इसका कारण सूझ ही गया। वो भागा-भागा घर आया, "माँ समझ गया। चाँद में चुम्बक है इसलिए तो वो सबके साथ-साथ चलता है।" कुछ दिनों बाद अक्का ने सूरज को चाँद में बदलने का भी आसान तरीका खोज निकाला – सूर्य ग्रहण देखने वाले चश्मे से सूरज को देखो वो चाँद बन जाता है।

चाँद और त्यौहारों का अच्छा-खासा रिश्ता है – ईद, शरद पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा...। इन्हें तो बहुत लोग जानते हैं पर एक थोड़ा कम जाना-पहचाना त्योहार है – चौठ चन्द्र। भादो मास में पूर्णिमा के चौथे दिन इसे मिथिलांचल में मनाया जाता है। इस दिन खूब पुए-पकवान बनते हैं। शाम होते ही बच्चे आँगन में जमा होने लगते हैं। सब जल्दी में रहते हैं कि चाँद दिखे तो पुआ-पूड़ी मिले। सब कहते हैं, "उगह चान कि लपकब पूआ।" (चाँद उगे कि पुए खाने को मिलें।) इसका इस्तेमाल कहावत के रूप में भी किया जाता है – मौका मिलते ही उसे लपकने की ताक में रहना।

धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में बच्चे बीरबहूटी (छोटा-सा लाल रंग का कीड़ा जिस पर काले धब्बे होते हैं) को चन्दामामा कहते हैं। और उसे हथेली पर रखकर पूछते हैं, चन्दामामा बता पास कि फेल।
अगर वो उड़ जाए तो फेल, हाथ में टिकी रहे तो पास।

दादी की गोद में चढ़ा नन्हा अप्पू चीखा, "अम्मुमा चन्द्रन पोट्टी पोई।" (दादी चाँद टूट गया!) क्योंकि कुछ दिन पहले जब दादी ने चाँद दिखाया था तब तो वो पूरा गोल था।

चाँद चाँद चाँद

एक कहावत है कि चाँद पर एक आदमी रहता है। यह थोड़ा-सा सच भी है। वो इसलिए कि चाँद पर आदमी तो नहीं पर उसकी अस्थियाँ ज़रूर हैं। यूजिन शूमेकर नाम के भूगर्भ वैज्ञानिक की बड़ी इच्छा थी कि वो चाँद पर जाए। पर मेडिकल परीक्षण में असफल हो जाने के कारण वो खगोलयात्री नहीं बन पाया। उसके मरने के बाद जुलाई 31, 1999 में उसकी अस्थियाँ अन्तरिक्ष वाहन से चाँद पर पहुँचाई गईं।

पश्चिम देशों में मान्यता है कि चाँद पनीर से बना है। 1988 में एक सर्वे किया गया। उसके अनुसार 13 प्रतिशत लोग इसे सही मानते हैं।

दुनिया के विभिन्न देशों ने चाँद की ज़मीन को लेकर एक अन्तरिक्ष समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के अनुसार कोई भी देश चाँद की ज़मीन पर कब्ज़ा नहीं कर सकता। ठीक वैसे ही जैसे पृथ्वी के समुद्रों के पानी पर किसी देश का हक नहीं बनता है।

पूरे ब्रह्माण्ड में पृथ्वी के अलावा चाँद ही ऐसी एकमात्र जगह है जिस पर मनुष्य ने अपना कदम रखा है।